

भारत-यूरोपीय संघ FTA: 'सभी समझौतों की जननी' और सामरिक आर्थिक एकीकरण की ओर भारत की छलांग

UPSC प्रायोगिकता: सामान्य अध्ययन प्रश्नपत्र II - अंतर्राष्ट्रीय संबंध / सामान्य अध्ययन प्रश्नपत्र III - भारतीय अर्थव्यवस्था

चर्चा में क्यों?

IAS-PCS Institute

लगभग दो दशकों की बातचीत के बाद, भारत और यूरोपीय संघ (EU) ने भारत-यूरोपीय संघ मुक्त व्यापार समझौते (FTA) को अंतिम रूप दे दिया है, जिसे "सभी समझौतों की जननी" के रूप में वर्णित किया गया है। यह समझौता यूरोपीय संघ को होने वाले 99% से अधिक भारतीय निर्यात और भारत को होने वाले 97.5% यूरोपीय निर्यात पर शुल्क (टैरिफ) को समाप्त या कम करता है, साथ ही सेवाओं, निवेश, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), सेमीकंडक्टर, संधारणीयता और नियामक मानकों में सहयोग का विस्तार करता है।



पृष्ठभूमि: भारत-यूरोपीय संघ FTA का विकास (2007–2025)

भारत-यूरोपीय संघ FTA बढ़ती वैश्विक वार्ताविकाताओं द्वारा आकार ली गई एक लंबी और विकसित होती संलग्नता को दर्शाता है:

- **2007:** वस्तुओं, सेवाओं और निवेश को कवर करने वाले 'व्यापक व्यापार और निवेश समझौते' (BTIA) के लिए बातचीत शुरू हुई।
- **2013:** ऑटोमोबाइल, वाइन, डेयरी, बौद्धिक संपदा अधिकार, डेटा सुरक्षा और सार्वजनिक खरीद पर मतभेदों के कारण वार्ता रुक गई।
- **2022:** एक व्यावहारिक रीसेट के साथ बातचीत फिर से शुरू हुई, जिसमें कठिन मुहों को अलग रखा गया। भारत-यूरोपीय संघ व्यापार और प्रौद्योगिकी परिषद (TTC) का शुभारंभ किया गया, जो टैरिफ से पेरे गहरे सहयोग का संकेत था।
- **2023:** सेमीकंडक्टर आपूर्ति शृंखला लचीलेपन पर केंद्रित एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए गए।
- **2025:** FTA को 'व्यापक सामरिक एजेंडा 2030' के साथ संपन्न किया गया, जिससे साझेदारी का विस्तार AI गवर्नेंस, सेमीकंडक्टर R&D, नियामक अभियान और सामरिक प्रौद्योगिकियों तक हो

गया। यह विकास एक पारंपरिक व्यापार समझौते से एक रणनीतिक तकनीकी-आर्थिक साझेदारी में परिवर्तन का प्रतीक है।

भारत-यूरोपीय संघ FTA के मुख्य उद्देश्य

यह समझौता कई परस्पर जुड़े उद्देश्यों द्वारा निर्देशित है:

- शुल्क उन्मूलन और कटौती के माध्यम से भारतीय वस्तुओं के लिए बाजार पहुंच में सुधार करना।
- सेवाओं के व्यापार का उदारीकरण करना, विशेष रूप से IT, डिजिटल, रसायन योग्य सेवा और पेशेवर सेवाओं में।
- भारत और यूरोपीय संघ के बीच कुशल पेशेवरों की आवाजाही को सुनिश्चित करना।
- नियामक नियंत्रिता और पारदर्शिता के माध्यम से उच्च गुणवत्ता वाले यूरोपीय निवेश को आकर्षित करना।
- नियामक सहयोग और मानकों के संरचना के माध्यम से ऐर-टैरिफ बाधाओं को कम करना।
- भारत को एक विश्वसनीय विनिर्माण केंद्र के रूप में यूरोपीय और वैश्विक मूल्य शृंखलाओं में एकीकृत करना।
- 'मेक इन इंडिया' और PLI योजनाओं के अनुरूप निर्यात-आधारित विकास का समर्थन करना।
- भारत के आर्थिक लचीलेपन को बढ़ाने के लिए व्यापार साझेदारी का विविधीकरण करना।



आर्थिक और विकासात्मक लाभ

1. वस्तु निर्यात और रोजगार को बढ़ावा

@resultmitra

www.resultmitra.com



9235313184, 9235440806

यूरोपीय संघ भारत का सबसे बड़ा निर्यात बाजार ब्लॉक है, जो भारत के कुल निर्यात का लगभग 17% छिस्सा है। 2024-25 में भारत ने यूरोपीय संघ को 75-80 बिलियन अमेरिकी डॉलर मूल्य की वस्तुओं का निर्यात किया। शुल्क मुक्त पहुंच से श्रम-प्रधान क्षेत्रों को लाभ होगा जैसे:

- कपड़ा और परिधान
- चमड़ा और जूते
- रत्न एवं आभूषण
- फार्मास्यूटिकल्स, इंजीनियरिंग सामान और रसायन ये क्षेत्र MSME और रोजगार सूजन के लिए महत्वपूर्ण हैं, जिनमें श्रम-प्रधान निर्यात में 10-15% की वृद्धि होने की उम्मीद है।

2. सेवा व्यापार का विस्तार

भारत ने 2024-25 में यूरोपीय संघ को लगभग 50 बिलियन अमेरिकी डॉलर की सेवाओं का निर्यात किया, मुख्य रूप से IT, टेलीकॉम, डिजिटल और व्यावसायिक सेवाओं में। 144 यूरोपीय संघ सेवा उप-क्षेत्रों में प्रतिबद्धताएं:

- भारत के वैश्विक सेवा पदचिह्न को मजबूत करेंगी।
- कुशल पेशेवरों की अधिक आवाजाही को सक्षम करेंगी।
- ज्ञान और डिजिटल सेवा केंद्र के रूप में भारत की स्थिति को बढ़ाएंगी।

3. निवेश और प्रौद्योगिकी लाभ

यूरोप ने 2023-24 में भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) में लगभग 70 बिलियन अमेरिकी डॉलर का योगदान दिया। निवेश संरक्षण और नियामक रूपान्वयन से निम्नालिखित क्षेत्रों में दीर्घकालिक पूँजी आकर्षित हो सकती है:

- विनिर्माण और सेमीकंडक्टर
- हरित प्रौद्योगिकियां और डिजिटल बुनियादी ढांचा यह फार्मास्यूटिकल्स, ऑटो घटकों, इंजीनियरिंग सामानों और रसायनों में औद्योगिक उन्नयन का समर्थन करता है।

4. वैश्विक मूल्य शृंखलाओं (GVC) में एकीकरण

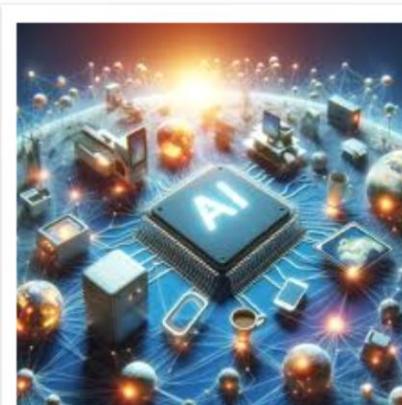
यह FTA भारत को एक विश्वसनीय "चीन-प्लास-वन" गंतव्य के रूप में स्थापित करता है, जिससे भारतीय फर्में यूरोपीय आपूर्ति शृंखलाओं में एकीकृत हो सकेंगी और निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ेगी।

प्रौद्योगिकी, AI और सेमीकंडक्टर सहयोग

9235313184, 9235440806

इस FTA की एक परिभाषित विशेषता प्रौद्योगिकी सह-निर्माण पर इसका जोर है:

- सेमीकंडक्टर:** सेमीकंडक्टर डिजाइन और उन्नत पैकेजिंग में संयुक्त R&D भारत को महंगे फैब्रिकेशन प्लांट के बिना उच्च मूल्य वर्धित क्षेत्रों में भाग लेने की अनुमति देता है।
- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस:** यूरोपीय AI कार्यालय और भारत के राष्ट्रीय AI मिशन / IndiaAI सेप्टी इंस्टीट्यूट के बीच सीधा समन्वय AI सुरक्षा परीक्षण, मॉडल मूल्यांकन और नियामक सरेखण पर सहयोग सक्षम बनाता है। यह तकनीकी संप्रभुता



को मजबूत करता है और अमेरिका-केंद्रित बौद्धिक संपदा पर निर्भरता कम करता है।

रणनीतिक और भू-राजनीतिक महत्व

भारत और यूरोपीय संघ मिलकर वैश्विक व्यापार का लगभग एक-तिहाई हिस्सा हैं। यह FTA वैश्विक व्यापार के विचंडन, बढ़ते संरक्षणवाद और केंद्रित आपूर्ति शृंखलाओं पर अति-निर्भरता के बीच उभरा है।

IAS-PCS Institute



- यूरोपीय संघ के लिए:** यह समझौता सामरिक निर्भरता को कम करता है।
- भारत के लिए:** यह सामरिक स्वायतता को मजबूत करता है और वैश्विक व्यापार शासन में इसकी आवाज को बुलंद करता है।

चुनौतियां और जोखिम

इसके बादों के बावजूद, कई चिंताएं बनी हुई हैं:

- यूरोपीय संघ में उच्च पर्यावरणीय और श्रम मानक भारतीय निर्यातकों के लिए अनुपालन लागत बढ़ाते हैं।
- कार्बन बॉर्डर एडजरस्टमेंट मैक्सिम (CBAM) स्टील, सीमेंट और एल्युमीनियम के निर्यात को प्रभावित कर सकता है।
- बौद्धिक संपदा अधिकार (IPR) का दबाव, विशेष रूप से दबाओं में डेटा विशिष्टता, भारत के जेनेरिक दबा उद्योग को प्रभावित कर सकती है।
- डेटा स्थानीयकरण और सीमा पार डेटा प्रवाह पर डिजिटल व्यापार घर्षण बना हुआ है।
- ऑटोमोबाइल, वाइन और स्पिरिट जैसे संवेदनशील क्षेत्रों पर टैरिफ कटौती समायोजन की चुनौतियां पेश करती हैं।
- छोटे निर्यातकों के लिए नियामक और मानकों का अनुपालन कठिन बना हुआ है।

आगे की राह

- MSME, कृषि और संवेदनशील क्षेत्रों को तालमेल बिठाने का समय देने के लिए टैरिफ उदारीकरण को चरणबद्ध करना।
- कोटा प्रणाली और व्यापार उपचारों का उपयोग करके घेरलू उद्योगों की रक्षा करना।
- उच्च मूल्य वाले विनिर्माण को बढ़ावा देने के लिए FTA को 'मेक इन इंडिया' और PLI योजनाओं के साथ जोड़ना।

- नवाचार के अनुकूल डेटा गतिशीलता को सक्षम करते हुए डिजिटल संप्रभुता की रक्षा करना।
- भारत की फार्मस्युटिकल और औद्योगिक प्रतिरप्दितमकता को बनाए रखने के लिए IPR और CBAM वित्ताओं को दूर करना।
- IT, पेशेवर सेवाओं का विस्तार करके और यूरोपीय FDI को आकर्षित करके सेवाओं और सामरिक लाभों का लाभ उठाना।

निष्कर्ष

भारत-यूरोपीय संघ FTA टैरिफ-केंद्रित उदारीकरण से सामरिक आर्थिक एकीकरण की ओर एक निर्णायक बदलाव का प्रतीक है। बाजार पहुंच को सेवाओं, प्रौद्योगिकी, AI, सेमीकंडक्टर और संधारणीयता में सहयोग के साथ जोड़कर, यह समझौता भारत को न केवल एक निर्यातक के रूप में, बल्कि वैश्विक आर्थिक और तकनीकी मानदंडों के सह-निर्माता के रूप में स्थापित करता है।

मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रण

प्रृष्ठ: "प्रस्तावित भारत-यूरोपीय संघ मुक्त व्यापार समझौता (FTA) केवल एक व्यापार समझौता नहीं है, बल्कि एक सामरिक आर्थिक साझेदारी है।" इस संदर्भ में, भारत के लिए भारत-यूरोपीय संघ FTA के उद्देश्यों और संभावित लाभों का परीक्षण कीजिए। साथ ही, समझौते से जुड़ी प्रमुख चुनौतियों का आलोचनात्मक विश्लेषण कीजिए और एक व्यावहारिक आगे की याह सुझाइए। (250 शब्द)

Result Mitra

रिजल्ट का साथी



@resultmitra



www.resultmitra.com



9235313184, 9235440806

